FA - II
Subject :- Hindi
Class – VII

5. ईसा मसीह

लघु उत्तरीय प्रश्न –

प्रश्न 1 :- जोसफ बेथलेहम क्यों आया था?

उत्तर :- सम्राट आगस्टस के आदेश से रोम में जनगणना हो रही थी। नियम के अनुसार लोगों को अपने जन्म स्थान पर जाना पड़ता था इसलिए जोसफ भी जनगणना कराने के लिए बेथलेहम आया था।

प्रश्न 2 :- ईसा ने जॉन को अपना गुरू क्यों बनाया?

उत्तर :- जॉन सादा जीवन बिताने वाले महापुरूष थे. जो जॉर्डन नदी के किनारे जंगल में रहते थे। वे महात्मा थे। तीस वर्ष की अवस्था में ईसा ने अपना घर त्याग दिया था और जॉन से मिलने के बाद उनसे दीक्षा प्राप्त कर उन्हें गुरू बना लिया था।

प्रश्न 3 :- यरूशलम के शासकों से ईसा मसीह की शिकायत किसने की?

उत्तर :- ईसा मसीह समाज में शान्ति स्थापित करना चाहते थे। इसलिए वे और उनके अनुयायी रोम से युद्ध करने की बात को स्वीकार नहीं कर रहे थे। अतः यहूदी धर्म गुरूओं ने ईसा मसीह से ईर्ष्या के कारण यरूशलम के शासक को ईसा मसीह की शिकायत कर दी।

प्रश्न 4 :- ईसा मसीह ने अपने हत्यारों के लिए क्या प्रार्थना की?

उत्तर :- ईसा मसीह ने अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की की - "हे प्रभु! इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।"

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

प्रश्न 1 :- महात्मा ईसा का जन्म कहाँ और किन परिस्थितियों में हुआ?

उत्तर :- महात्मा ईसा का जन्म नासरत प्रांत के एक गाँव बैथलेहम में बहुत-ही कठिन परिस्थितियों में हुआ था।

P.T.O.

उस समय उनके पिता जोसफ़ और माता मरियम जनगणना कराने के लिए बैथलेहम आए थे। परन्तु इन्हें रहने के लिए किसी धर्मशाला में भी स्थान नहीं मिला और रात अस्तबल में बितानी पड़ी। वहीं रात को ईसा मसीह का जन्म हुआ था।

प्रश्न 2:- बालक जीसस में महापुरुष बनने के क्या-क्या लक्षण थे?

उत्तर:- जीसस ईश्वर के पुत्र थे और उनमें बचपन से ही महापुरुष बनने के लक्षण दिखाई देते थे। वे तीव्रबुद्धि, शांत, नम्र, और मृदुभाषी थे। इनका मन सांसारिक बातों में ना लगकर ईश्वर की बातों में अधिक लगने लगा था। इस प्रकार वे बचपन से ही ईश्वर की ओर प्रवृत्त हो गए और ये लक्षण केवल महापुरुष में ही दिखाई देते हैं।

प्रश्न 3:- महात्मा ईसा को ज्ञान की प्राप्ति किस प्रकार हुई?

उत्तर:- तीस वर्ष की आयु में घर छोड़ने के बाद ईसा मसीह जंगलों में रहने लगे जहाँ उन्होंने महात्मा जॉन से दीक्षा प्राप्त की। उसके पश्चात चालीस दिन तक जंगल में रहकर उपवास किया और निरंतर ध्यान में मग्न रहें जिसके फलस्वरूप ईसा को ज्ञान की प्राप्ति हुई।

प्रश्न 4:- महात्मा ईसा के प्रमुख उपदेश लिखो। तुम्हें इनमें सबसे अच्छा उपदेश कौन-सा लगा?

उत्तर:- महात्मा ईसा के प्रमुख उपदेश थे -

1. धन्य हैं वे जिनके हृदय में नम्रता, पवित्रता और शांति का भाव होता है। उनसे ईश्वर भी प्रेम करते हैं।
2. ईसा मसीह कहते थे कि बुरा करने वाले के साथ भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए और अपराध करनेवाले को क्षमा कर देना चाहिए तभी ईश्वर भी हमारी बुराइयों को क्षमा कर देते हैं।
3. दान सदैव गुप्त रूप से देना चाहिए।

प्रश्न 5:- कुछ लोग महात्मा ईसा के विरुद्ध क्यों हो गए थे?

उत्तर:- महात्मा ईसा प्रेम और शांति के उपासक थे। इसलिए उन्होंने रोम से युद्ध करने की बात मानने से इंकार कर दिया। इस कारण यरूशलम पहुँचने पर यहूदी धर्म गुरुओं ने उनका विरोध किया और षड़यंत्र रचकर यरूशलम के शासकों से उनकी झूठी शिकायत कर दी।

प्रश्न 6:- ईसा मसीह को क्या दण्ड दिया गया?

उत्तर:- यहूदी धर्म गुरुओं की शिकायत पर महात्मा ईसा को पकड़ लिया गया और प्राण दण्ड दिया गया। जिनके कल्याण के लिए महात्मा ईसा ने जीवन भर काम किया उन्हीं लोगों के बीच उन्हें क्रूस पर लटका दिया गया।

प्रश्न 7:- ईसा मसीह के जीवन की घटनाओं को अपने शब्दों में लिखो?

उत्तर:- ईसा मसीह का जन्म बेथलेहम में एक अस्तबल में हुआ था। उनकी माता का नाम मरियम और पिता का नाम जोसफ था। ईसा बचपन से ही तीव्रबुद्धि, शांत एवं नम्र बालक थे। तीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने घर का त्याग कर दिया था। जंगल में रहते हुए महात्मा जॉन से दीक्षा प्राप्त की और चालीस दिन का उपवास किया। वहीं उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। महात्मा ईसा का प्रमुख उपदेश था कि अपने शत्रु से भी प्यार करो और उन्हें क्षमा कर दो। ईसा की प्रसिद्धि से अन्य धर्म गुरु उनसे घृणा करने लगे और उन्होंने उनकी झूठी शिकायत कर दी इस कार्य में उनका शिष्य जूडास भी शामिल था। ईसा को मृत्यु दण्ड की सजा मिली। उनके पैरों और हाथों में कीलें ठोककर क्रूस पर लटका दिया। ईसा ने मरते समय भी प्रेम, भाईचारे और सहिष्णुता का संदेश दिया।

पाठ- हेर-फेर

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्र० 1- मज़दूर खुश क्यों था ?
उ० 2- मज़दूर खुश इसलिए था कि उसके पास दो आने (पैसे) थे।

प्र० 2- मज़दूर की कल्पना मिट्टी में क्यों मिल गई ?
उ० 2- क्योंकि वह अपनी शादी के सपने देखते हुए जा रहा था तभी बारात के आगे चलने वाले नौकरों ने उसे डाँट कर सड़क के किनारे कर दिया था इसलिए उसकी सारी कल्पना मिट्टी में मिल गई।

प्र० 3- रईस की पालकी क्यों रुक गई ?
उ० 3- रईस की पालकी इस लिए रुक गई क्योंकि रास्ते में मज़दूरों की बारात निकल रही थी।

प्र० 4- पालकी से उतरकर रईस आराम क्यों करना चाहता था ?
उ० 4- मज़दूरों पर जब डंडे बरसने लगे और चीखें मारते हुए इधर-उधर भागने लगे तो उनके शोरगुल से परेशान होकर पालकी से उतर कर रईस आराम करना चाहता था।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्र० 1- बारात वालों ने मज़दूर को सड़क के बाहर क्यों फेंक दिया ?
उ० 1- जब सड़क पर एक बारात जा रही थी। बारात के आगे चलने वाले नौकरों ने उसे (मज़दूर को) रास्ते से हट जाने के लिए कहा परंतु जब वह नहीं हटा तो बारात वालों ने उसे पीट कर सड़क के बाहर फेंक दिया।

प्र० 2- मज़दूर ने भगवान से क्या शिकायत की ?
उ० 2- मज़दूर ने भगवान से शिकायत की कि हे ईश्वर ! जब हमारे पास न तो धन-दौलत है और न ही महल अटारी, बंगले हैं तो तूने हमें पैदा ही क्यों किया ? क्या इसलिए कि हम अमीरों तथा उनके नौकरों की नफ़रत का शिकार बनते रहें, वे हमें मार कर सड़क के किनारे फेंक दें।

प्र० 3- मज़दूर किस प्रकार रईस बन गया।
उ० 3- मज़दूर ने खूब मेहनत की। उसने आराम भूल कर दिन-रात काम किया तथा छल-कपट और धोखे से भी धन कमाया। इस प्रकार वह रईस बन गया।

प्र० 4- रईस ने भगवान से क्या शिकायत की?
उ० 4- रईस ने भगवान से शिकायत की कि हे ईश्वर! इन बेचारे मज़दूरों के पास न तो धन-दौलत है न ही महल-अटारियाँ, न ही नौकर-चाकर। जब इन के पास रईसों के समान सुख के साधन नहीं हैं तो तूने इन्हें पैदा ही क्यों किया? क्या इसलिए कि ये हमारे रास्ते की अड़चन बनें और हमारा समय नष्ट करें। दुनिया में इनकी जरूरत ही क्या है?

प्र० 5- मज़दूर और रईस के साज-सामानों में क्या अंतर था।
उ० 5- मज़दूर के पास कम सामान होता है जैसे- एक चूल्हा कुछ बर्तन - कपड़े इत्यादि जबकि इसके विपरीत रईस के पास धन-दौलत के साथ-साथ, विशाल महल, नौकर-चाकर, तथा घोड़े पालकियाँ इत्यादि था।

प्र० 6- मज़दूर की दशा का वर्णन अपने शब्दों में करिए।
उ० 6- मज़दूर अत्यन्त गरीब था। उसके पास दो वक्त रोटी खाने तक के लिए पैसे नहीं होते। वह नंगे पाँव और नंगे सिर था। उसके पास दो-चार बर्तन और एक चूल्हे के अलावा कोई साजो-सामान न था। मगर फिर भी वह दो आने पैसे में ही खुश था। उसमें भी वह अपनी शादी के सपने देखा करता था।

प्र० 7- रईस की शानो-शौकत का वर्णन अपने शब्दों में करो।
उ० 7- रईस अपने नगर का नामी रईस था। उसके पास धन-दौलत मोहरें तथा विशाल महल था। उसे चारों ओर नौकर-चाकर घूमते रहते। जो उसकी सारी आज्ञाओं का पालन करते थे। उसके पास बहुत से घोड़े और पालकियाँ थी जिनमें सवार

होकर वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर आया-जाया करता था।

प्र० 8. आखिर दुनिया में इनकी क्या ज़रूरत है?- इस वाक्य का विश्लेषण कीजिए।

उ० 8. अमीर लोग सभी चीज़ों पर अपना अधिकार समझते हैं, यहाँ तक कि वे गरीबों को पृथ्वी पर बोझ मानते हैं। अमीरों के अनुसार इस संसार में गरीबों की कोई ज़रूरत नहीं है। उनका मानना है कि गरीब लोग अमीरों के लिए केवल परेशानियाँ ही पैदा करते हैं। इससे अधिक कुछ नहीं।

—x—

VII पाठ-स्वतंत्रता का दीपक

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्र० 1. 'स्वतंत्रता का दीपक' कविता कब लिखी गई होगी?

उ० 1. (ख) स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात्।

प्र० 2. कवि ने स्वतंत्रता के दीपक को क्या-क्या उपमाएँ दी हैं?

उ० 2- कवि ने स्वतंत्रता के दीपक को रात, शक्ति, स्वदेश, शहीद का पुण्य प्राण-दान इत्यादि की उपमाएं दी हैं।

प्र० 3- 'स्वतंत्रता का दीपक' कविता में कवि अपने देशवासियों से क्या आह्वान करता है?

उ० 3- कवि देशवासियों से आह्वान करता है कि - सदैव स्वतंत्रता रूपी दीपक को जलाए रखें।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्र० 1. स्वतंत्रता को कवि ने दीपक की संज्ञा क्यों दी है?

उ० 1. स्वतंत्रता को कवि ने दीपक की संज्ञा इसलिए दी है क्योंकि स्वतंत्रता दीपक के समान लोगों के जीवन में प्रकाश डालती है उसे ज्योतिर्मय बनाती है।

प्र० 2- कवि स्वतंत्रता के दीपक को किन-किन परिस्थितियों में भी जलाए रखने की प्रेरणा देता है।

उ० 2- कवि ने स्वतंत्रता के दीपक को विषम परिस्थितियों में भी जलाए रखने की प्रेरणा दी है। कवि का कहना है कि - चाहे घना अँधेरा हो, चाहे आँधी-तूफान आएँ, शांति हो या अशांति हो, युद्ध हो या क्रांति हो, यह दीपक कभी भी नहीं बुझना चाहिए। बादल बरसे या आसमान में बिजली चमके परंतु यह दीपक सदैव ही जलता रहना चाहिए।

7. हमें न बाँधो प्राचीरों से

अर्थ / भावार्थ-

हम पंछी उन्मुक्त ---------- बाँधो प्राचीरों से।

अर्थ 1:- प्रस्तुत कविता में कवि ने बंधन-मुक्त स्वच्छंद जीवन की महिमा पंक्तियों के माध्यम से प्रकट की है। कवि कहते हैं कि पंछी मनुष्य से प्रार्थना करते हैं कि हम स्वतंत्र आकाश में उड़ने वाले पंछी हैं। पिंजरे में बंद रहकर हमारी आवाज़ की मधुरता समाप्त हो जाएगी और पिंजरे को तोड़कर उड़ने के प्रयास में हमारे पंख इन सुनहरी जालियों से टकराकर टूट जाएँगे। अर्थात् पिंजरे में बंद रहने से हमारी खुशियाँ कम हो जाएँगी।

अर्थ 2, पंछी कहते हैं कि नदियों और झरनों का जल पीने वाले हम स्वतंत्रता के पुजारी हैं। स्वतंत्र रहते हुए हमें भूख और प्यास से मरना पसंद है। पिंजरे में सोने की कटोरी में रखी रोटी से ज्यादा हमें कड़वी निबौली अच्छी लगती है। अर्थात् गुलामी के जीवन में सभी सुविधाएँ होने पर भी पंछी स्वतन्त्र रहकर अनेक कष्ट उठाना चाहता है।

अर्थ 3:- पंछी अपनी व्यथा को व्यक्त करते हुए कहता है कि सोने की इन जंजीरों में बंद रहकर हम अपनी उड़ने की शक्ति को भूल गए हैं। पेड़ की शाखाओं पर झूलना और ठण्डी हवा को महसूस करना अब केवल सपनों की बात लगती है। अर्थात् पिंजरे में रहकर पंछी अपनी स्वाभाविक उड़ान भी भूल गए हैं और स्वतंत्रता का सुख केवल सपना बनकर रह गया है।

अर्थ 4:- पंछी के अरमान हैं कि वह इतना ऊँचा उड़े ताकि नीले आकाश की सीमा को छू सके और अपनी चोंच से तारे रूपी अनार के दानों को चुग सकें। अर्थात् पंछी स्वतंत्र आकाश में उड़ना चाहते हैं और मनपसंद वस्तुएँ चुगना चाहते हैं।

अर्थ 5:- पंछी कहता है कि आकाश की सीमा को छूने के प्रयास में हमारे दोनों पंखों में प्रतिस्पर्धा-सी होने लगती है और हम शीघ्रता से उड़ते हुए निकल जाते है। कभी-कभी हमारे प्रयास सफल हो जाते हैं और हम आकाश में लम्बी दूरी तक उड़ जाते हैं। परन्तु कभी-कभी हम थक कर बैठ भी जाते हैं या फिर अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं।

अर्थ 6:- पंछी कहता है कि हे मानव! तुम चाहो तो हमारे आश्रय या पेड़ों को काट दो, हमारे घोंसले भी तोड़ दो परन्तु ईश्वर ने हमें उड़ने के लिए जो पंख दिए हैं तो उन पंखों को निर्जीव बनाकर हमारी उड़ान में बाधा उत्पन्न ना करो। अर्थात् पंछी बंधनमुक्त जीवन जीने के लिए लाख कष्ट उठाने के लिए भी तैयार है।

अर्थ 7:- पंछी कहते हैं कि हमें बंधन में रखना उचित नहीं है। जिस प्रकार देह के मृत होने पर प्राण मुक्त होकर बाहर निकल जाते हैं और आकाश भी उन्हें स्वर्ग में जाने से रोक नहीं पाता है। उसी प्रकार पंछी को भी चारदीवारी में बंद रखना असंभव है। स्वतंत्र रहकर ही वे अपना स्वाभाविक जीवन जी सकते हैं।

लघुउत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न 1. 'हमें न बाँधों प्राचीरों से' कविता में पक्षियों की क्या प्रार्थना है?

उत्तर- पक्षी बंधन मुक्त जीवन जीना चाहते हैं।

प्रश्न 2:- इस कविता में पक्षियों की किस विशेषता का परिचय मिलता है?

उत्तर- पक्षियों की विशेषता है कि वे बंधन मुक्त जीवन जीना चाहते हैं और स्वतंत्र होकर आकाश में उड़ना चाहते हैं।

प्रश्न 3:- 'हमें न बाँधों प्राचीरों से' कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- इस कविता से हमें स्वतंत्र रहने की प्रेरणा मिलती है।

क्योंकि स्वतंत्रता के जीवन में कष्ट अनेक हैं परन्तु स्वतन्त्रता के सुख के आगे ये सारे कष्ट बहुत छोटे लगते हैं। इसलिए मनुष्य हो या पशु-पक्षी सभी को स्वतन्त्रता पूर्वक जीने का अधिकार है। अतः एक-दूसरे की स्वतन्त्रता में बाधा उत्पन्न नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 4- पक्षियों का सपना क्या है?

उत्तर- पक्षियों का सपना है कि नीले आकाश में उड़ान भरकर उसकी सीमा तक पहुँचना चाहते हैं और अपनी लाल चोंच से तारे रूपी अनार के दानों को चुगना चाहते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न —

प्रश्न 1:- पिंजरे में बंद पक्षी किस प्रकार के स्वप्न देखते हैं?

उत्तर- पिंजरे में बंद पक्षी पेड़ो की शाखाओं पर बैठकर झूला झूलने के सपने देखते हैं।

प्रश्न 2- 'कहीं भली है कटुक निबौरी, कनक-कटोरी की मैदा से' इस पंक्ति में कटुक निबौरी ---------- प्रयुक्त हुए हैं?

उत्तर- कटुक निबौरी का अर्थ है कड़वी निबौली - अर्थात् स्वतंत्र रहकर रूखी-सूखी रोटी खाने से है। 'कनक कटोरी की मैदा' अर्थात् सोने की कटोरी में रखी रोटी। ये प्रतीक स्वतंत्र जीवन और परतंत्र जीवन के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

प्रश्न 4:- 'हम बहता जल पीने वाले' - इस पंक्ति में भारतवासियों की किस विशेषता को बताया गया है?

उत्तर- इस पंक्ति के द्वारा बताया गया है कि भारतवासी मेहनत करके खाने वाले हैं। वे बंधन में नहीं रह सकते हैं। स्वतन्त्रता उन्हें पसंद है जिसके लिए वे अनेक कष्ट सहने को भी तैयार हैं।

****